4.26.80 A

कभी-कभार

अशोक वाजपेयी

बनारस में लोकसंपदा

बनारस में संस्कृत का सुरम्य वैभव और भोजपुरी की उच्छल लोकधर्मिता सदियों से एक साथ रहे हैं। उनमें जो संवाद और साहचर्य है उसका कोई नोटिस वहां के वर्तमान विद्वानों और अकादेमिक विशेषज्ञों ने लिया हो, इसकी जानकारी नहीं है। शास्त्र और लोक के बीच आवाजाही का जिक्र बहुत होता है, लेकिन उसे समझने-बूझने की कोई पुष्ट और सजीव परंपरा है ऐसा नहीं लगता। इसलिए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने उत्तर और मध्य भारत की लोकसंपदा का अन्वेषण और अभिलेखन का जो उपक्रम शुरू किया है वह एक जरूरी पहल है।

हमारी लोककलाएं साधारण जन की अपनी कलाए हैं: उनमें प्रायः पूरा समुदाय हिस्सा लेता है। वहां कलाकार और रसिक का द्वैत होता ही नहीं। कई बार तो पूरा समुदाय नाचता-गाता है, अलग से कोई देखने-सुनने वाला नहीं होता। इस अर्थ में वे बेहद लोकतांत्रिक हैं। सामुदायिकता की सहज अभिव्यक्ति भी। सभी निपट स्थानीय होती हैं: उनके आशय और संकेत सार्वभौमिक हो सकते हैं, होते ही हैं। लेकिन वे सभी स्थानीय रंग-गंध में इस कदर बद्धमूल होते हैं कि उन्हें अलगाया नहीं जा सकता। आधुनिकता के जो सबसे प्रभावशाली रूप हैं वे प्रायः अलगाव से उपजते हैं: जीवन, प्रकृति, सरसता, समरसता आदि से अलगाव। लोककलाएं इसके विपरीत गहरे लगाव से उपजतीं और उसे ही चरितार्थ करती हैं- उनमें जीवन का अदम्य उत्सव प्रगट होता रहता है। वे अथक रूप से संसार का गुणगान होती हैं। वे अवसरों के भी अनुकूल होती हैं: जन्म, मृत्यु, विवाह आदि या ऋतुचक्र के अनुसार। वे गहरी धार्मिकता और जातीयता से उपजती हैं, पर वे अपनी व्याप्ति में दोनों का अतिक्रमण भी करती रहती हैं।

मानवीय संबंधों की अपार ऐंद्रियता सबसे अधिक लोककलाओं में ही समाहित है। लोककलाओं के भौतिक साधन और उपकरण सीमित होते हैं, पर यही उनकी कल्पनाशीलता को उत्तेजित करने का आधार बन जाता है। साधनहीनता कैसे कल्पना की रणनीति में बदलती है इसका ये कलाएं बेहद शिक्षाप्रद उदाहरण हैं। वित्त-दरिद्र किंतु कला-समृद्ध। भारतीय बहुलता का सबसे स्पंदित-ऊर्जस्वित परिसर लोककलाएं ही हैं। हमारी आधुनिकता ने उनसे बहुत कम सीखा है, बल्कि अक्सर उसे अपने भूगोल से बाहर ही कर रखा है। यह अलक्षित नहीं जाना चाहिए कि जब भी हमारे किसी आधुनिक लेखक ने अपने को इस लोकसंपदा से जोड़ने का उद्यम किया है, उसकी आधुनिकता में नई दीप्ति और शक्ति आई है। नागार्जुन और फणीश्वरनाथ रेणु इसके लगभग कालजयी उदाहरण हैं। रंगमंच में तो कई मूर्धन्यों जैसे हबीब तनवीर, बव कारंत, कावलम नारायण पणिक्कर, रतन थियेम आदि की कल्पना बिना उनके लोकधर्मी रंगस्वभाव के नहीं की जा सकती। कुमार गंधर्व ने संगीत में और जगदीश स्वामीनाथन ने ललित कलाओं में लोक और शास्त्र की समकक्षता का और उनकी समकालीनता पर जो आग्रह किया उसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

इसको भी ठीक से दर्ज नहीं किया गया है कि, उदाहरण के लिए, भरत के नाट्यशास्त्र की कई विधियां और अनुष्ठान आधुनिक रंगमंच से तो कब के गायब हो चुके, पर कई लोकरूपों में बचे हुए हैं जो उन्हें शास्त्र का बेहतर और अधिक जिम्मेदार उत्तराधिकारी बनाती है। यह धारणा भी अपरीक्षित रहने के बावजूद आम है कि लोककलाओं में दुहराव बहुत है और परिवर्तन बहुत कम है। इसे लक्ष्य करने की बारीकी इधर कम है कि लोककलाओं में परिवर्तन उनकी निरंतरता का अंग है, बाहर से दीख सकने वाला पक्ष नहीं। किसी इतालवी लेखक का कथन याद आता है: हर चीज के वही बने रहने के लिए हर चीज को बदलना चाहिए। अगर ऐसा न हो तो सब कुछ खो जा सकता है।

बनारस में रायकृष्ण दास, वासुदेव शरण अग्रवाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे कलाविद् हुए हैं, जो लोकसंपदा के प्रति सजग-सक्रिय थे। लेकिन वहां, जैसे कि अन्यत्र भी, लोककलाओं पर उचित और विचारप्रवण आलोचनात्मक ध्यान नहीं दिया गया है। लोककलाओं पर जो कुछ लिखा गया है उसका अधिकांश सतही, विवरणात्मक-सूचनापरक ही है। उसमें उचित वैचारिक सघनता और गहरी रसज्ञता का घोर अभाव रहा है। बनारस का उपक्रम अगर वहां जल्दी ही स्थापित होने जा रहे भो के माध्यम से इस ओर गंभीरता से सजग-सक्रिय हो तो लोकव विशद अध्ययन-अनुसंधान की नई शुरुआत हो सकती है।

जनसत्ता, लखनऊ
रविवार, 4 मार्च, 2012
पृ० - 6

आज

वाराणसी, २७ फरवरी, २०१२ ५

त्रिदिवसीय लोकोत्सव आजसे

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्रके संयुक्त तत्वावधानमें २६ से २९ फरवरी तक पूर्वाह्न साढ़े दस बजेसे कला संकायके सनी बेसेन्ट हालमें लोकाख्यानका आयोजन किया गया है। त्रिदिवसीय संगोष्ठीमें पूरे देशसे लोकवार्ताके विद्वान भाग लेंगे। कार्यक्रममें तीनों ही दिन अपराह्न साढ़े चार बजेसे लोकविधाओंका गायन एवं प्रदर्शन होगा। यह जानकारी कमलेश त्रिपाठीने दी है।

6 | दैनिक जागरण वाराणसी, 1 मार्च 2012

पंवरिया व कुम्हरऊ नृत्य ने मन मोहा

वाराणसी, बीएचयू प्रतिनिधि : काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित कला संकाय प्रेक्षागृह में लोकनृत्यों की धूम रही। गाजीपुर से मुनीब अहमद व उनके दल ने पंवरिया नृत्य व गीत से रोमांचित किया तो रामकृत प्रजापति व उनके दल ने कुम्हरऊ नृत्य व गायन से समा बांधा। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के पूर्व क्षेत्रीय केंद्र व कला संकाय (बीएचयू) के तत्वावधान में तीन दिनी कार्यक्रम के तहत बुधवार को दर्शकों ने लोकजीवन की धारा में जमकर गोते लगाए।

अमरउजाला वाराणसी | बृहस्पतिवार | 1 मार्च 2012

पंवरिया और जोगिया नृत्य पर झूमे श्रोता

बीएचयू में राष्ट्रीय लोक महोत्सव संपन्न

वाराणसी(ब्यूरो)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और बीएचयू के साझे तत्वावधान में आयोजित लोक महोत्सव बुधवार शाम लोक नृत्यों की नयनाभिराम प्रस्तुति के साथ संपन्न हुआ। समापन सत्र में कला संकाय प्रेक्षागृह में मुनीब अहमद और उनके साथियों ने पंवरिया नृत्य की गायन के साथ मनोहारी प्रस्तुति की तो रामकृत प्रजापति और साथियों ने कुम्हरउ नृत्य की गायन के साथ प्रस्तुति की। बिहार के हाजीपुर से आए रईस जोगी ने जोगिया का गायन पेश किया। इससे पहले एनी बेसेंट सभागार में संगीत नाटक अकादमी से जुड़े ओम प्रकाश भारती ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भरथरी और जोगिया की गाथा उत्तर भारत के सभी बोलियों में किंचित अलग-अलग रूपों में मिलती हैं। भोजपुरी अध्ययन केंद्र के समन्वयक प्रो. सदानंद शाही ने कहा कि लुप्त हो रही जोगिया कला के संरक्षण की तत्काल पहल की जरूरत है।

अमर उजाला | वाराणसी | बुधवार | 29 फरवरी 2012

बीएचयू में लोक कला महोत्सव के दूसरे दिन चैती की हुई मनोहारी प्रस्तुति

अद्भुत लोकगायन शैली है चैता

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। चैता अद्भुत लोकगायन शैली है। इसमें सबसे पहले भुइयां यानी धरती का गुणगान होता है। धरती मां सबकी हैं और चैता भी किसी एक जाति का नहीं बल्कि सबकी लोक गायन शैली है। यह बातें बीएचयू के हिंदी विभाग के प्रो. बलिराज पांडेय ने कहीं।

वह मंगलवार को विश्वविद्यालय के एनी बेसेंट सभागार में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के तत्वावधान में आयोजित लोक कला महोत्सव के दूसरे दिन उत्तर एवं मध्य भारत के लोक नृत्य एवं संगीत विषय पर विशिष्ट संबोधन दे रहे थे। उन्होंने चैता और चैती का अंतर समझाया तो सभा कक्ष तालियों से गड़गड़ा उठा। प्रो. मौली कौशन ने कहा कि लोक कलाओं में लोक सौंदर्य बोध काफी प्रकट रूप में आता है। वाराणसी दूरदर्शन के निदेशक डा. बालश्याम मिश्रा ने दूरदर्शन में लोक कलाओं पर कार्यक्रम निर्माण के अनुभवों के आधार पर गोंड़ नृत्य की विशिष्टताओं का जिक्र किया।

लोककला महोत्सव में उड़ीया लोक नृत्य प्रस्तुत करती कलाकार।

शाम के सत्र में कला संकाय प्रेक्षागृह में मशहूर गायिका सुचारिता गुप्ता की चैती पर तो दीर्घा मानों झूम उठी। इसके बोल थे, चैत मासे लागेला टिकोरवा हो रामा..। इससे पहले उन्होंने बनारसी होरी, धमाल और चौताल की प्रस्तुती दी। उड़ीसा से आए सुरेंद्र साहू और [illegible] ने गोड़ नृत्य की प्रस्तुती से दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

राष्ट्रीय सहारा
वाराणसी
वाराणसी। मंगलवार • 28 फरवरी • 2012

कलाओं का मूल स्रोत है लोक

गोष्ठी को सम्बोधित करते मुख्य अतिथि अशोक वाजपेयी।

लोक नृत्य एवं संगीत पर केंद्रित गोष्ठी का आगाज

वाराणसी (एसएनबी)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय केन्द्र, पूर्व क्षेत्रीय केंद्र एवं बीएचयू कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को उत्तर व मध्य भारत के लोक नृत्य एवं संगीत पर केंद्रित तीन दिवसीय गोष्ठी का भव्य आगाज हुआ। एनी बेसेंट सभागार, कला संकाय में आयोजित इस गोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कवि एवं कला मर्मज्ञ अशोक वाजपेयी ने किया। मौके पर उन्होंने कहा कि कलाओं का मूल स्रोत लोक है। भारतीय परंपरा में लोक एवं शास्त्र का कोई स्पष्ट अलगाव नहीं रहा है। लोक जीवन की कई कलाएं शास्त्रों में और उसके लोक विधा में संचरित होती रही है। चैती, कजरी आदि लोक रूपों को शास्त्रीय कला के रूप में भी स्वीकृति मिली है। पिछले 50 वर्षों से लोक कला का कोई रूप शास्त्रीय कला के रूप में स्वीकृत नहीं हो सका। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने लोककलाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके संरक्षण पर बल दिया। गोष्ठी के प्रथम सत्र में डा. रामनारायण तिवारी ने फाग और हसन इमान ने चैता पर प्रकाश डाला। दिल्ली से पधारी प्रो. मौली कौशल अध्यक्षा (जनपद सम्पदा) कार्यक्रम की विशिष्ठ अतिथि थीं। इसके अलावा दूसरे सत्र में इंदौर के भैरों सिंह चौहान व साथी, गाजीपुर के मनोज राय व साथी, बक्सर के ब्रह्मेश्वर राय एवं साथी ने फाग और चैता की मनोहारी प्रस्तुति दी। अतिथियों का स्वागत प्रो. कमलशील एवं अर्चना कुमार ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. राजकुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. संजय कुमार ने किया।

6 | दैनिक जागरण वाराणसी, 28 फरवरी 2012

फाग-चैता ने घोले उमंग के कई रंग

वाराणसी: काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित कला संकाय प्रेक्षागृह में सोमवार की शाम फागुन की बयारों के बीच होली और चैता ने लोगों के जज्बात को लोकजीवन से जोड़ा। इंदौर, गाजीपुर व बक्सर से आए लोक कलाकारों ने फाग और चैता से समां बांधा। 'उत्तर एवं मध्यभारत के लोक नृत्य एवं संगीत' पर केंद्रित तीन दिनी संगोष्ठी की पहली शाम लोकजीवन से जुड़ी गीत-गवनई ने परंपरागत जीवन को मजबूती दी। कलाकारों में भैरो सिंह चौहान व साथी, मनोज राय व साथी तथा ब्रह्मेश्वर राय व साथियों ने शानदार प्रस्तुति की इससे पहले एनी बेसेंट सभागार में संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कवि अशोक वाजपेयी ने कहा कि कला का मूल उत्सव लोक है। भारतीय परंपरा में में लोक और शास्त्र का कोई स्पष्ट अलगाव नहीं रहा है।

आज

वाराणसी, २८ फरवरी, २०१२ ५

लोक और शास्त्रमें विभेदकी मान्यता भारतीय परम्परामें नहीं रही

बीएचयू में तीन दिनी लोकनृत्य एवं संगीत विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके कला संकाय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्रके संयुक्त तत्वावधानमें एनीबेसेन्ट सभागारमें आयोजित उत्तर एवं मध्यभारतके लोक नृत्य एवं संगीत विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सह प्रदर्शनका शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कवि एवं कला मर्मज्ञ अशोक वाजपेयीने किया। इस अवसरपर उन्होंने कहाकि कलाओंका मूल लोक है। भारतीय परंपरामें लोक और शास्त्रका कोई स्पष्ट अलगाव नहीं रहा है। लोक जीवनकी कई कलाएं शास्त्रोंमें और शास्त्रोंकी विद्या लोकमें संचरित होती रही है। उन्होंने कहाकि चैती कजरी आदि लोक रूपोंको शास्त्रीय कलाके रूपमें भी स्वीकृति मिली है मगर विगत पचास सालोंसे लोक कलाका कोई भी रूप शास्त्रीय कलाके रूपमें स्वीकृत नहीं हो सका है। डाक्टर रामनारायण तिवारीने फाग और हसन इमानने चैतापर प्रकाश डाला। इस अवसरपर प्रोफेसर मौली कौशल, प्रोफेसर अवधेश प्रधान, हरेराम तिवारी, प्रोफेसर राधेश्याम दूबेने भी लोक कलाओंपर विचार व्यक्त किये। सांध्यकालीन सत्रमें भैरो सिंह चौहान एवं साथियोंने होरी, मनोज राय एवं साथियोंने फाग तथा ब्रह्मेश्वर एवं साथियोंने निर्गुण की शानदार प्रस्तुति कर पूरे माहौलमें फागुनी बयार बहा दी। कार्यक्रमकी अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर कमलेश दत्त त्रिपाठीने लोक कलाओंके महत्वपर प्रकाश डाला और उनके संरक्षणपर बल दिया। अतिथियोंका स्वागत कला संकाय प्रमुख प्रोफेसर कमलशील एवं धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर संजय कुमारने किया। संचालन प्रोफेसर राजकुमारने किया।

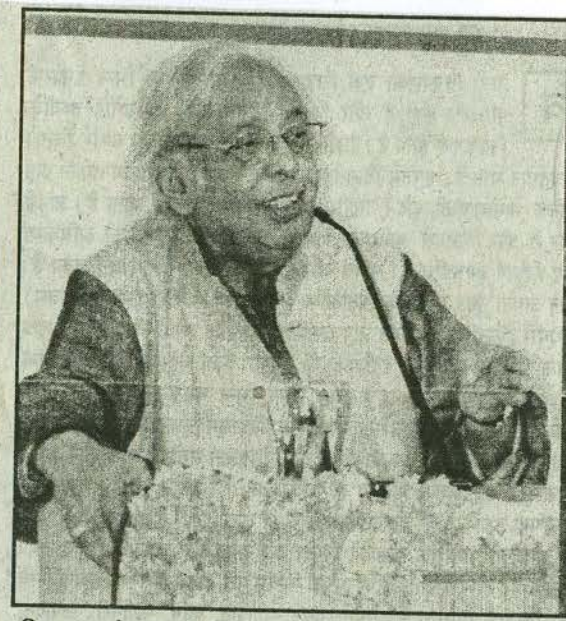

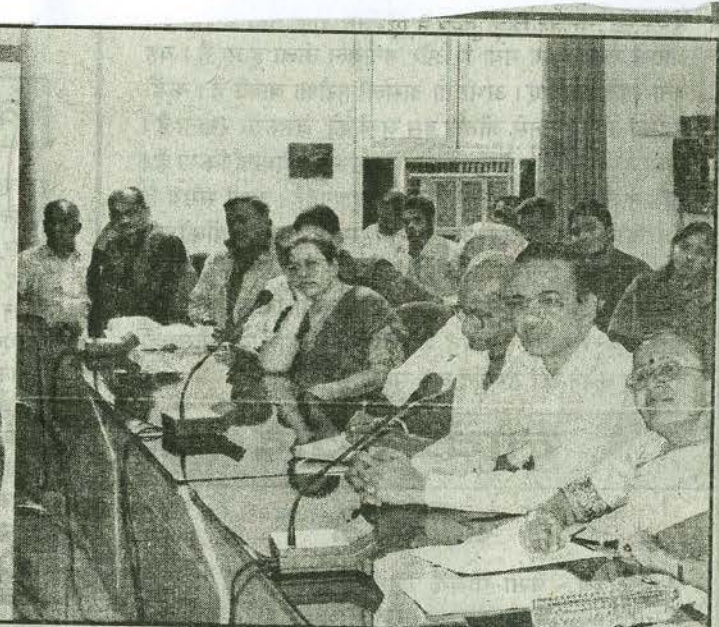

बीएचयू के एनीबेसेंट सभागारमें आयोजित सभाको सम्बोधित करते अशोक वाजपेयी। छाया : आज

हिन्दुस्तान • वाराणसी • मंगलवार • 28 फरवरी 2012 08

लोक कला और शास्त्रों में कोई स्पष्ट अलगाव नहीं

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

सुप्रसिद्ध कवि अशोक वाजपेयी ने कहा है कि लोक कला और शास्त्रों में कोई स्पष्ट अलगाव नहीं दिखता। दोनों ही विधाएं परस्पर संचरित होती रहीं हैं।

बीएचयू के कला संकाय के एनी बेसेंट हॉल में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सोमवार को उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि कलाओं का मूल उत्सव लोक है। चैती, कजरी आदि लोक रूपों को शास्त्रीय कला के रूप में भी स्वीकृति मिली है, लेकिन पिछले 50 सालों से लोक कला का कोई रूप शास्त्रीय कला के रूप में स्वीकृत नहीं हो सका। समारोह की अध्यक्षता प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने किया। विशिष्ट अतिथि दिल्ली की जनपद संपदा कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रो. मौली कौशल थीं। कला संकाय प्रमुख प्रो. कमलशील ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. अर्चना कुमार ने विषय स्थापना की। समारोह में डॉ. रामनारायण तिवारी, हसन इमाम, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. राधेश्याम दुबे ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ. संजय कुमार ने किया। शाम को इंदौर से आए भैरो सिंह चौहान, गाजीपुर के आदिनारायण राय व साथी ने फाग और चैता की प्रस्तुति की।

अमर उजाला

वाराणसी | मंगलवार | 28 फरवरी 2012

लोक व शास्त्र का कोई स्पष्ट अलगाव नहीं

वाराणसी। भारतीय परंपरा में लोक और शास्त्र का कोई स्पष्ट अलगाव नहीं रहा है। लोक जीवन की कई कलाएं शास्त्रों में और शास्त्रों की कई विद्याएं लोक में संचरित होती रही हैं। चैती, कजरी आदि लोक रूपों को शास्त्रीय रूप में स्वीकृति भी मिली, लेकिन बीते 50 सालों में लोक कला का कोई रूप शास्त्रीय रूप में स्वीकृत नहीं हो सका। यह बातें मशहूर कवि अशोक वाजपेयी ने कहीं। वह सोमवार को बीएचयू में कला संकाय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साझे तत्वावधान में उत्तर एवं मध्य भारत के लोक नृत्य एवं संगीत विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सह कला प्रदर्शन के उद्घाटन सत्र को एनी बेसेंट सभागार में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। गाजीपुर के डा. राम नारायण तिवारी ने फाग के विविध रूपों को गाकर विवेचित किया। अध्यक्षीय संबोधन केंद्र के सलाहकार प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने दिया। प्रो. कमल शील, प्रो. राजकुमार, डा. संजय कुमार, प्रो. मौली कौशल, प्रो. अवधेश प्रधान आदि मौजूद थे।